अगस्त - सितम्बर 2015
द्विमासिक पत्रिका
सत्यापित क्र. HAR HIN 04496/07/1/2007-T.C.

वर्ष-9 अंक-3
30 सितम्बर 2015

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा

परामर्शदाता : प्रान्त सेवाप्रमुख :
श्री सतीशचन्द्र सिंधवानी, रोहतक।
मो. 094667-25772
स्वामी : सेवा भारती (पंजी.), हरियाणा।
अध्यक्ष : प्रो. डॉ. बुद्ध सिंह
सी-7, अशोक विहार, फेज़ 2,
गुड़गांव-122001 - 099718-02274

सम्पादक एवं प्रकाशक : ओम प्रकाश अत्रेजा
ई-230, अर्जुन गेट, करनाल-132001
- 0184-2255852, 2255874
पत्रिका प्रबन्धक :
ओम प्रकाश वर्मा, एम.ए.बी.एड.
1414/13, अर्बन एस्टेट, करनाल-132001

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा का सम्पादन, लेखकों व अन्य सभी कार्य अवैतनिक हैं

सम्पादकीय- साफ़-सफ़ाई भी प्रभु की पूजा ही है।

मुझे कुछ वर्ष पूर्व अपने परिवार के साथ एक छोटे से देश मलेशिया जाने का अवसर मिला। उस देश की राजधानी कुआलालमपुर के हवाई अड्डे पर उतरकर जब हम बाहर आये तो हवाई अड्डे के बाहर से एक दर्जन केले लेकर एक टैक्सी में सवार हुए। रास्ते में केले छील कर खाने लगे तो टैक्सी ड्राईवर ने हिन्दी में कहा कि छिलके टैक्सी से बाहर मत फैंकना, उसने एक छोटा सा पॉलिथीन का थैला दिया और कहा कि छिलके इसमें डालते जाओ, आगे चलकर मैं इन्हें उचित स्थान पर फैंक दूँगा। (यहां मैं एक बात ध्यान में लाना चाहता हूँ कि मैं अन्य कई देशों में भी गया हूँ और आमतौर पर मैंने देखा है कि सभी देशों में टैक्सी ड्राईवर हिन्दी जानते हैं) मलेशिया का एक साधारण व्यक्ति भी इतना जागरुक है कि उसे अपने देश की सड़कें कैसे साफ रखनी हैं, वह भली भान्ति जानता है। हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को अपने हाथ से झाड़ू पकड़कर सड़क की सफाई करने में कोई शर्म महसूस नहीं होती। उन्होंने अनेक कार्यक्रमों में देश के नागरिकों को सफाई अभियान को आगे बढ़ाने की अपील की, परन्तु ऐसा लगता है कि हमारे देश के नागरिकों को साफ-सफाई बहुत छोटा काम लगता है, इस बारे में कुछ भी कहना बहुत कठिन है, कि इस अपील का आम नागरिकों पर कितना असर पड़ा। प्रधानमंत्री जी ने बार-बार राष्ट्र को यह स्पष्ट करने की कोशिश की कि यह कोई सरकारी कार्यक्रम नहीं है, ये देश का अभियान है इसे देश के आम नागरिकों ने ही सफल बनाना है। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देशवासियों का ऐसा स्वभाव बन गया है, कि देश की हर समस्या के समाधान के लिए सरकार का मुँह ताकने लगते हैं। अनेक बार प्रधानमंत्री की अपील के बाद भी सरकारी नौकरशाहों ने

कोई सक्रियता नहीं दिखाई। सबसे अधिक सामाजिक संस्थाओं से आशा थी। स्वयंसेवी संस्थाओं से अपेक्षा थी कि वे समाज में इस अभियान के बारे में जागरुकता पैदा करेंगे, उन्होंने भी झाड़ू पकड़कर चित्र खिंचवाकर मीडिया में प्रसिद्धि प्राप्त करने तक ही सक्रियता दिखाई। हमारे देश के लोगों में घर-बाहर, गली-मोहल्ले, सड़कों-पार्कों, सार्वजनिक स्थलों पर गन्दगी फैलाने की एक प्रकृति बन गई है। बदकिस्मती यह है कि इस प्रवृति के कारण गन्दगी फैलायें हम और सफ़ाई की शिकायत भी करें हम। 'स्वच्छ भारत- स्वस्थ भारत' केवल कहने भर से भारत स्वच्छ बनने वाला नहीं, कुछ करने से ही स्वच्छ भारत होगा। आज आवश्यकता है कि भारत के कोने-कोने में प्रत्येक भारतीय के हृदय में अंकित करे दें- **'स्वच्छ भारत देवो भवः'**, हमारे लिए स्वच्छ भारत ही प्रभु का रूप है, यह कार्य सेवा भारती को ही करना होगा। इसलिए हम सबका यह दायित्व बनता है कि जहां हम रहते हैं, वहां की साफ़-सफ़ाई की चिन्ता भी हम करें और जहाँ-जहाँ हमारी सेवा भारती के प्रकल्प चलते हैं वहां-वहां स्वयं चिन्ता करके प्रतिदिन सफाई करें, करवायें और प्रतिदिन सफ़ाई की पूरी व्यवस्था करें।

"उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

अर्थात सब काम उद्यम करने से, दुर्द्धर्ष पुरुषार्थ से ही सिद्ध होते हैं, केवल मानसिक कल्पना करने मात्र से काम संभव नहीं हो पाते। जंगल के राजा पराक्रमी सिंह को भी हिरन का शिकार करना पड़ता है, सोते रहने से हिरन उसके मुँह में स्वयं नहीं घुस जाता।

चलो! करें स्वच्छ-भारत बन्धू, नवयुग का आह्वान यही,
हम हैं गौरव अपने राष्ट्र के, हमसे माँ का सर ऊँचा।
स्वच्छ सुगंधित पुष्पित आंगन, वन-उपवन में पेड़ खड़े,
वायु-जल सर्वत्र रहें शुभ, निर्मल नदियां स्त्रोत बहें।
नगर-ग्राम और बस्ती-बस्ती, वनांचल में फल-फूल खिलें,
कोई कोना रहे न बाकी, विकसित तन-मन हो सबके।
नई चेतना नस-नस में भर, भारत स्वच्छ बनायें बन्धू। -अज्ञात

प्रसिद्धि तथा धन्यवाद की आशा से किया जाने वाला उपकार व्यर्थ होता है।

'सेवा दर्शन' का यह अंक देरी से पहुँचने पर क्षमा प्रार्थी। -सम्पादक

'आपकी पाती' **पहला रक्षा–सूत्र हमारे राष्ट्र को समर्पण**

जिसकी संस्कृति-संस्कार हमारे जीवन का दर्पण।
दूसरा सूत्र तेजस्वी भगवा ध्वज को है अर्पण,
तन-मन-धन गुरू के चरणों में समर्पण।
तीसरा सूत्र हमारे वीर शहीदों को अर्पण,
राष्ट्र सुरक्षा हित जिनका जीवन समर्पण।
चौथा सूत्र उन सभी भगिनि-बांधवों को अर्पण,
धर्म रक्षाहित जिनके जीवन का कण-कण समर्पण।
स्नेह सद्भावना की बनाई है बाती,
तप के तपन से जलाई है ज्योति।
देश की सुरक्षा का स्वीकारो बन्धन,
तभी सार्थ होगा ये रक्षा-बंधन, रक्षा का बंधन।

यह रक्षा सूत्र हमारी भारत माता को समर्पण।। -शांताक्का, नागपुर

'सेवा दर्शन' पत्रिका के 3 अंक पढ़ने को मिले, बहुत ही अच्छा लगा। सचमुच आप सब प्रशंसा व बधाई के पात्र हैं। जो भी जानकारी आप दे रहे हैं, सचमुच बहुत ही रोचक और बहुमूल्य है। भगवान आप को आशीर्वाद दे, आप इसी तरह समाज की सेवा करते रहें। **-अजनीश कुमार लुधियाना**

'हिन्दी धरती माँ की बिन्दी'

हमारी प्रिय भाषा, हमारी मातृभाषा, हमारी राष्ट्रभाषा, हमारी वैज्ञानिक भाषा का 10वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 से 12 सितम्बर भोपाल में हो गया। सन् 1975 से पूर्व प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन की पृष्ठ भूमि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार श्री ललन प्रसाद व्यास श्री अटल बिहार वाजपेयी को आमन्त्रित करने उनके पास गए थे। श्री वाजपेयी जी उस सम्मेलन में नहीं जा सके थे। परन्तु उन्होंने आपात्काल के समय लिखा- बनने चली विश्व की भाषा, जो अपने घर में दासी,

सिंहासन पर अंग्रेज़ी है, लखकर दुनिया हांसी।
लखकर दुनिया हांसी, हिन्दीदाँ बनते चपरासी,
अफ़सर सारे अंग्रेज़ीमय, अवधी या मद्रासी।
कह कैदी कविराय, विश्व की चिन्ता छोड़ो,
पहले अपने घर में, अंग्रेज़ी गढ़ को फोड़ो।

श्री अटल जी ने सत्य कहा, 'अभी तक भारतीय संसद में अंग्रेज़ी अफ़सरशाही की बाधाओं के कारण राजभाषा समिति का ही गठन नहीं हो पाया।'

हिन्दुस्थान में बाबर, औरंगज़ेब, याकूब मेमन के समर्थक?

एक बार इतिहास की परीक्षा में एक प्रश्न था- मुग़ल काल का भारतीय संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ा? एक विद्यार्थी ने उत्तर दिया-भारत में जितने भी विदेशी आक्रमणकारी आए, चाहे वह मुहम्मद-बिन-कासिम था, महमूद ग़ज़नवी था, मुहम्मद गौरी, बाबर शाहजहाँ, उसका बेटा औरंगज़ेब, नादिरशाह, उस बीच और अनेक विदेशी आक्रान्ता-तैमूर लंग, अहमदशाह अब्दाली इत्यादि सबके सब लुटेरे, डाकू हमारी धी-बहनों की इज़्ज़त लूटने वाले, मन्दिरों व अन्य पूजाघरों को तोड़ने वाले थे। उस समय एक लोकोक्ति हर हिन्दू की जुबान पर होती थी- **'खादा पीता लाहे दा, ते बाकी नादिरशाहे दा',** यह सब यहाँ के निवासियों का ज़बरन धर्मान्तरण कराने वाले ज़ालिम थे। ऐसे आक्रान्ताओं का हमारे राष्ट्र पर जो प्रभाव पड़ना चाहिए था वह पड़ा। उस विद्यार्थी ने आगे लिखा - यह सच्चाई लिखने के बाद अगर परीक्षक मुझे फेल करना चाहे तो कर दे, परन्तु सच्चाई यही है। **-अन्तर ताने से**

हम कैसे भूल जाएँ प्रेम के मसीहा? शाहजहां को, जिसके काज़ियों ने 13 वर्ष के मासूम बच्चे वीर हकीकत राय खन्ना को धर्म न बदलने पर लाहौर में कत्ल करके शहीद कर दिया था। उसने अपने भाईयों के कत्ल करने से लेकर बाप को कैद करने तक का कोई काम ऐसा नहीं छोड़ा जिसपर उसकी निर्दयता की छाप न पड़ी हो। जुल्मो-सितम से संग्रहीत पूंजी-उपभोग में खुद और अपनी प्रिय बीवी तक को शामिल रखा, अपने दरबार में बैठने के लिए बहुमूल्य तख्त-ए-ताऊस बनवाया। मरने के बाद शानदार कब्र के रूप में ताजमहल खड़ा कर लिया। ग्वालियर नरेश से कोहिनूर हीरा, सोने, जवाहारात लूटने के लिए वहाँ खूब कत्लो-ग़ारत की। उसके बाद औरंगज़ेब ने सिक्खों के 9वें गुरू तेगबहादुर को अज़ाब दे-देकर उनके पाँच साथियों के साथ चाँदनी चौक बाज़ार के फव्वारा चौक पर शहीद कर दिया था। उसमें भाई मतिदास को आरे से चिरवाया, भाई सतिदास को कपास में लपेटकर उसको आग में झोंक दिया और भाई दयाला को उबलते हुए पानी की देग में डाल दिया गया।

16वीं सदी में जब बाबर ने यहां अपना साम्राज्य स्थापित किया था, तो उसने गौहत्या पर प्रतिबन्ध लगाकर अपने पुत्र हुमायुं को गद्दी सौंपने से पहले ताकीद की थी कि अगर हिन्दोस्तान पर हुकूमत करना चाहते हो तो गाय की किसी भी कीमत पर कुर्बानी मत होने देना। गोमांस के खाने पर प्रतिबन्ध और गौकशी पर पूरी पाबन्दी रखना। यह सिलसिला शाहजहाँ तक

चला, जैसे ही औरंगज़ेब के हाथ में सत्ता आई तो उसने गुजरात का सूबेदार बनते ही वहां के चिन्तामणि जैन तीर्थ को मस्जिद में बदलकर वहां गौहत्या कराई। बाद में औरंगज़ेब ने सभी हिन्दू मान्यताओं के साथ जमकर खून की होली खेली और बकरा-ईद पर गौहत्या के रिवाज को बढ़ावा दिया। उफ़! ऐसे क्रूर शहनशाह, घोर हिन्दू विरोधी कट्टर मज़हबी औरंगज़ेब के नाम पर दिल्ली में एक सड़क का नाम 70 सालों तक कैसे चलने दिया गया? नई दिल्ली नगरपालिका ने उस सड़क का नाम बदलकर महान वैज्ञानिक, देशभक्त, एक सच्चे राष्ट्रवादी पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री अबुल पाकीर ज़ैनुल अब्बादीन अब्दुल कलाम के नाम पर रखकर अति सराहनीय काम किया है।

एक बात स्पष्ट हो गई है, कि आज भी गुलामी के प्रतीकों को हटाने पर देश में एक वर्ग ऐसा है, जो राष्ट्रहित में किए गए कामों के विरुद्ध हाय-तौबा मचाने लगता है। बहुत ही अचम्भे की बात है, कि भारत में आज भी ओसामा, बग़दादी, हाफ़िज सईद, सलाहुद्दीन, कसाब, अफ़ज़ल गुरू जैस अमानुषों के समर्थक आज़ाद घूमते हैं। भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त किए 68 वर्ष बीत गए-जैसे ही कोई 'वन्देमातरम्' बोलता है-तो हाय-हाय भगवाकरण हो गया, 'भारत माता की जय' कहने पर भगवाकरण, श्री कृष्ण भगवान की गीता की चर्चा करने लगो, तो झूठे सेक्युलरवादी शोर मचाने लगते हैं- भगवाकरण- भगवाकरण, महाराणा प्रताप, शिवाजी को याद करो तो हाय-तोबा, हाय-तोबा मचाने लगते हैं। सबसे रोचक बात यह है, कि कट्टरवादी मुल्लाओं के साथ वामपंथी भी खड़े हो गए और इस फ़ैसले के खिलाफ ज़ोरदार प्रदर्शन भी किया। मामला अदालत तक जा पहुँचा। ओखला के पूर्व विधायक मुहम्मद आसिफ़ खां ने एक टैलीविज़न चैनल को इंटरव्यू देते हुए यह धमकी भी दे डाली, कि देश में 1100 जगहों पर सड़कों के नाम औरंगज़ेब के नाम पर रखे जाएँगे। पुराने दल-बदलू आसिफ़ खां की आदत नित नए विवाद खड़े करके खबरों में बने रहने की है। कभी उन्होंने खुलेआम कुख्यात आतंकवादी ओसामा-बिन-लादेन के समर्थन में पूरे क्षेत्र में पोस्टर लगाने की हिम्मत की थी। इसके बाद जब भी ओखला क्षेत्र से किसी पाकिस्तानी जासूस को पकड़ा गया, आसिफ़ साहब ने उसको छुड़ाने के लिए ध रना देने से भी गुरेज़ नहीं किया।

दिल्ली में सड़कों के नाम दर्जनों बार बदले गए हैं, मगर कभी इस तरह से विरोध नहीं हुआ। नाम बदलने के अभियान की शुरुआत वर्ष 1960

में डॉ॰ राममनोहर लोहिया ने की थी। कट्टर मुस्लिम नेताओं का औरंगज़ेब प्रेम तो समझ में आता है, मगर वामदल समर्थक क्यों अपना सीना पीट रहे हैं ? वैसे दुर्भाग्य से इस देश में यह फ़ैशन बन गया है कि हिन्दू विरोधी हर बात को प्रगतिशीलता और सैक्युलरवाद का प्रतीक माना जाता है। जहाँ तक शहंशाह औरंगज़ेब का संबंध है, वह एक ढोंगी, धर्मान्ध, ज़ालिम, कुलघाती बादशाह था। औरंगज़ेब ने गद्दी पाने के लिए अपने बड़े भाई दारा शिकोह, मुराद तथा शुजा की निर्मम हत्याएँ करवाई। अपने बूढ़े बाप शाहजहां को सात वर्ष तक कैद में रखा। अपने 31 भतीजों को पकड़कर पहले तो ग्वालियर के किले में बंद कर दिया और बाद में उन सबकी निर्मम हत्या करवा दी। अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए लाखों लोगों के खून से अपने हाथ रंगे। सिक्खों के 9वें गुरू श्री तेगबहादुर को उनके चार साथियों सहित निर्ममतापूर्वक दिल्ली में इसी बादशाह के आदेश पर शहीद किया गया था, क्योंकि उन्होंने इस्लाम कबूल करने से साफ इन्कार कर दिया था। बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर के शाही परिवारों के दर्जनों लोगों को इसलिए औरंगज़ेब के हुक्म से मौत के घाट उतारा गया, क्योंकि वे शिया थे और सुन्नी मज़हब को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुए थे।

औरंगज़ेब एक अय्याश व्यक्ति था। विख्यात इतिहासकार सर जदुनाथ सरकार के अनुसार उसके रनिवास (हरम) में 3170 महिलायें थीं। इसके बावजूद उसने कई राजाओं और जागीरदारों को इस बात के लिए मजबूर किया कि वह अपनी पुत्रियों को उसकी कामवासना की पूर्ति के लिए उसके हरम में भेजें। इस कामुक ने अपने भाइयों की पत्नियों को भी नहीं बख़्शा। दारा शिकोह और मुराद के हरम की सभी महिलाओं को ज़बरन अपने रनिवास में दाखिल किया। इस्लाम के ग़ाज़ी इस बादशाह ने हिन्दुओं का जिस कदर उत्पीड़न किया, वह भारतीय इतिहास का सबसे काला अध्याय है। उसके काले कारनामों के सरकारी फ़रमान आज भी मूल रूप में रामपुर की रज़ा लाइब्रेरी और राष्ट्रीय अभिलेखागार में सुरक्षित हैं। कुछ सैक्युलरवादी तथाकथित इतिहासकारों, जैसे डॉ॰ बी॰ एन॰ पांडे ने यह दावा किया कि औरंगज़ेब ने अनेक मंदिरों को जागीरें दी थीं। उन्होंने इस संदर्भ में जिन कथित फ़रमानों का उल्लेख किया, उनमें से किसी का रिकार्ड शाही दफ़्तर में मौजूद नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि औरंगज़ेब के काले दाग़ों को हटाने के लिए इस तरह के हथकंडों का सहारा लिया गया।

शहंशाह के दफ़्तर से जारी इन शाही फ़रमानों के अनुसार सन् 1669 में औरंगज़ेब के साम्राज्य में स्थित सभी हिन्दू मंदिरों को ध्वस्त कर दिया जाए। इसके साथ ही उसने ब्राह्मणों द्वारा धार्मिक शिक्षा देने को भी जुर्म करार दिया था। सैंकड़ों ब्राह्मणों को हिन्दू धर्म की शिक्षा देने के जुर्म में मौत के घाट उतारा गया था। औरंगज़ेब की धर्मान्धता का वैसे तो हज़ारों मंदिर शिकार हुए। उसके आदेश से ध्वस्त किए गए हज़ारों मन्दिर औरंगज़ेब द्वारा शाही फरमानों और उसके दफ़्तर के सरकारी रिकार्ड पर आधारित हैं। औरंगज़ेब ने दिल्ली के विख्यात कालका जी मंदिर को 3 सितम्बर, 1667 में ध्वस्त करने का निर्देश दिया। सैयद फौलाद खां एक सौ बेलदार लेकर गए और उन्होंने इस प्राचीन मंदिर को मिट्टी में मिला दिया। अगस्त, 1669 में काशी के विख्यात विश्वनाथ मंदिर को ध्वस्त करके उसकी जगह पर ज्ञानवापी मस्जिद का निर्माण किया गया, जोकि आज भी मौजूद है और एक अत्याचारी शहंशाह के जुल्म की कहानी सुनाती है। मथुरा में भगवान श्रीकृष्ण के जन्म स्थान पर स्थित केशवदेव के मंदिर को 1670 में ध्वस्त किया गया, इसके साथ डेढ़ सौ से अधिक हिन्दू मंदिर भी नेस्तोनाबूद किए गए। औरंगज़ेब के आदेश पर मथुरा का नाम बदलकर इस्लामाबाद रखा गया। वहाँ के फ़ौजदार ने कई बैलगाड़ियों में तोड़ी गई मूर्तियाँ आगरा भेजीं। आगरा में इन मूर्तियों को जामा मस्जिद की सीढ़ियों में गाड़ दिया गया ताकि नमाज़ी इनको रौंदते हुए जाएँ। मथुरा स्थित श्रीनाथ जी के मंदिर के पुजारी पवित्र मूर्ति को लेकर भागने में सफल हो गए। कोई राजा इन पुजारियों को शरण देने के लिए तैयार नहीं था, मगर उदयपुर के महाराज राणा राज सिंह ने न सिर्फ़ इन पुजारियों को शरण दी बल्कि नाथद्वारा में इस पवित्र प्रतिमा को स्थापित भी करवाया। यह मंदिर आज भी मौजूद है। गुजरात के विख्यात सोमनाथ मंदिर को ध्वस्त करने का निर्देश 9 अप्रैल, 1669 में दिया गया। औरंगज़ेब ने अपने फ़रमान में यह स्पष्ट निर्देश दिया था कि इस मंदिर को इस तरह से ध्वस्त किया जाये, ताकि उसका नामोनिशान बाकी न रहे। 25 मई, 1679 में शाही फ़रमान पर जोधपुर में खानजहां नामक मुग़ल सूबेदार ने 150 हिन्दू मंदिरों को ध्वस्त किया और उनकी टूटी हुई मूर्तियों को आगरा भिजवा दिया। सितम्बर, 1679 में उदयपुर में स्थित जगदीश मंदिर को औरंगज़ेब के आदेश पर तोड़ा गया। मंदिर की रक्षा करते हुए सैंकड़ों राजपूत शहीद हो गए। 1680 में जब औरंगज़ेब उदयपुर के दौरे पर गया तो उसके निर्देश पर वहाँ स्थित 150 मंदिर

चुन-चुनकर तोड़ दिए गए। 13 सितम्बर, 1682 को बनारस स्थित बिन्दु माधव मंदिर को ध्वस्त किया गया। इसके साथ ही 500 अन्य मंदिर भी नेस्तनाबूद किए गए। 1686 में अम्बर के समीप स्थित 100 से अधिक मंदिर तोड़े गए। अब्बू तोराब नामक सूबेदार ने इसकी सूचना जब बादशाह को दी तो बादशाह बहुत प्रसन्न हुए और उसने इस मंदिर भंजक को भारी इनाम दिया। 1681 में बादशाह ने मोहम्मद खलील को यह निर्देश दिया कि महाराष्ट्र में स्थित पंडरपुर के प्राचीन विठोबा मंदिर को मिट्टी में मिला दिया जाए। बादशाह ने यह भी कहा कि हिन्दू वहाँ पर अपने बुतखाने का निर्माण न कर सकें, इसलिए यह ज़रूरी है कि वहाँ पर कसाइयों द्वारा कई गऊओं का वध करके उनका रक्त और मांस इस मंदिर स्थल पर डाल दिया जाए। मंदिर में 100 गौवों को कत्ल करके उस मंदिर को अपवित्र कर दिया था। 2 अप्रैल, 1679 में औरंगज़ेब ने उसके राज्य में रहने वाले सभी हिन्दुओं पर जज़िया लगा दिया, इसके साथ ही बादशाह ने यह भी आदेश दिया कि जो हिन्दू इस्लाम धर्म को कबूल करता है उसे 4-4 रुपए ईनाम और सरकारी नौकरी दी जाएगी। सर जदुनाथ सरकार के अनुसार तलपट क्षेत्र में 40 हज़ार जाटों की निर्ममतापूर्वक हत्या की गई, किसी महिला और बच्चे को भी नहीं बख्शा गया। इन अत्याचारों के कारण ही उसके आँख बंद करते ही मुग़ल साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। ऐसे अत्याचारी और बरबर राक्षस के नाम पर एक सड़क का नाम दिल्ली के नाम पर काला धब्बा था, जिसे दिल्ली सरकार ने मिटा दिया, इसके लिए साधुवाद। **-संकलित**

'सेवा भारती, ऐलनाबाद'

रानी लक्ष्मीबाई सिलाई केन्द्र का शुभमुर्हूत वार्ड नं॰ 1 संत रविदास धर्मशाला में 28 जुलाई, 15 को किया गया, जिसमें सेवा भारती के शिक्षा केन्द्रों के 70 बच्चों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि श्री हरि प्रसाद जी व वशिष्ट अतिथि श्री सुरजा राम जी द्वारा भारत माता व संत रविदास के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित करके शुरूआत की। बच्चों ने गायत्री मन्त्र तीन बार बोलकर प्रार्थना की, बच्चों ने आये हुए सभी मेहमानों का गीत गाकर स्वागत किया। सिलाई केन्द्र में 24 बच्चों ने अपने नाम दर्ज करवाए, जिसमें समय शाम 4 से 6 बजे रखा गया। बच्चों को सिलाई के साथ-2 अच्छे संस्कार व राष्ट्र भक्ति गीत भजन भी सिखाए जाते हैं। सभी केन्द्रों के बच्चों ने अपने-2 भजन व राष्ट्रीय-गीत सुनाए। मोहल्ले के अभिभावक भी शामिल हुए। सेवा

भारती के अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, सचिव व सभी सदस्य हाज़िर हुए। श्री चाननमल तलवाड़िया, श्रीराम लाल मैहता, श्री के॰ सी॰ छापोला, डॉ॰ सुरेन्द्र गुप्ता, मनीराम गुप्ता, कन्हैया लाल, वीरेन्द्र सिंह कथूरिया, चन्दूराम शर्मा, राम किशन कम्बोज, नरेन्द्र सपरा शामिल हुए। अन्त में शान्ति पाठ के बाद सभी बच्चों को प्रसाद बाँटा गया। जिन बच्चों ने गीत गाये उन्हें एक पैन व कापी सिलाई केन्द्र के बच्चों को कैंची व इंचीटेप दिया गया। **-नरेन्द्र सपरा, सचिव**

'सेवा भारती यमुनानगर द्वारा किया गया पौधारोपण'

23 जुलाई 2015 को श्री नवीन त्यागी एवं श्रीमती सुनीता त्यागी नगर सचिव ने अपने सुपुत्र श्री गौरव त्यागी के जन्म दिन पर महर्षि विद्या मन्दिर पब्लिक स्कूल अम्बाला रोड जगाधरी में 10 औषधीय गुणों वाले पौधे और 90 पेड़ फलों वाले लगवाये। इस अवसर पर यमुनानगर के ज़िला अतिरिक्त उपायुक्त डॉ॰ सतबीर सिंह सैनी ने आँवला वृक्ष लगाकर कहा, कि पेड़ों से पुत्रवत प्यार करें। यह शुद्ध वातावरण एवं पर्यावरण की ओर एक सराहनीय कदम है। कुछ वर्षों बाद औषधीय गुणों वाले फलों का प्रयोग भी आरम्भ हो जायेगा। ऐसे वृक्षों का रोपण प्रदेश की जानी मानी संस्था H.E.S. के संचालक ग्रीनमैन के नाम से प्रसिद्ध डॉ॰ एस॰ एल॰ सैनी ने किया। हमारा सौभाग्य है कि वे यमुनानगर वासी हैं। महर्षि विद्या मन्दिर स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती रमा मैहता व स्टाफ ने अपना पूरा सहयोग दिया। इस कार्यक्रम में त्यागी परिवार के सदस्य श्री वाई॰ डी॰ थरेजा नगर संरक्षक, श्री नन्द लाल शर्मा नगर अध्यक्ष, श्री नवीन गौतम प्रचार प्रमुख श्री सतपाल शर्मा सदस्य, श्रीमती रुचि महाजन C.W.C उपस्थित रहे। पौधारोपण कार्यक्रम में सबकी आँखें नम थीं ऐसा लग रहा था कि इन वृक्षों के रूप में प्यारा बेटा गौरव सबके साथ खड़ा है।

रक्षाबन्धन : 29 अगस्त 2015 को सेवा भारती, यमुनानगर द्वारा झुग्गी झोंपड़ी में बच्चों व उनके माता-पिता के साथ मिलकर "रक्षा बन्धन" का त्यौहार मनाया। स्वयंसेवकों के साथ-साथ सेवा भरती के सदस्यों ने प्रत्येक झोंपड़ी में जाकर वहाँ के निवासियों को तिलक लगाकर रक्षा-सूत्र बाँधा। इस अवसर पर श्रीमती सुनीता त्यागी संस्कृत अध्यापिका महर्षि विद्या मन्दिर जगाधरी ने बच्चों को इस पर्व की महत्ता बताते हुए कहा कि रक्षा बन्धन के पवित्र दिन पर बहन-भाई की कलाई पर रक्षा-सूत्र बाँधती है और उसकी दीर्घायु की कामना करती है। वहीं भाई अपनी बहन को हर संकट से बचाने का वचन देता है। बच्चों ने अपने हाथों से सुन्दर-सुन्दर राखियाँ बनाई। इस अवसर पर

बच्चों ने देश भक्ति के गीत व कविताएँ सुनाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री कर्ण जी ने बच्चों को गीत सिखाये। कार्यक्रम के अन्त में बच्चों को फल-मिठाई वितरित की गई। कार्यक्रम में नगर ईकाई के सदस्य श्री वाई॰ डी॰ थरेजा संरक्षक, श्री नन्दलाल शर्मा नगर अध्यक्ष, श्री नवीन त्यागी नगर सचिव, श्री नवीन गौतम प्रचार प्रमुख उपस्थित रहे।

-नन्दलाल शर्मा

स्वतन्त्रता दिवस, 15 अगस्त को ग्राम गधौली में बाल संस्कार केन्द्र में बच्चों के साथ मनाया गया। श्रीमती सुनीता त्यागी अध्यापिका महर्षि विद्या मन्दिर जगाधरी ने बच्चों को स्वतन्त्रता दिवस के बारे में बताया, हमें आज़ादी बड़ी कुर्बानियों से मिली है। बच्चों ने देश भक्ति गीत कविताएँ सुनाई। सभी सदस्यों ने बच्चों के साथ गीत गाए। इस अवसर पर सर्वश्री नवीन त्यागी नगर सचिव, योग ध्यान थरेजा नगर संरक्षक, नन्दलाल शर्मा नगर अध्यक्ष उपस्थित रहे। कार्यक्रम की समाप्ति पर बच्चों को लड्डू वितरित किए गए।

-नवीन गौतम प्रचार प्रमुख

सेवा भारती करनाल में तीज उत्सव

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सेवा भारती, करनाल में तीज का उत्सव पूरे हर्षोउल्लास के साथ O.P.S. विद्या मन्दिर, Sector-13 के प्रांगण में मनाया गया। मुख्य अतिथि श्री अमरिन्दर सिंह जी OSD तथा विशिष्ट अतिथि श्री गिरीश जी अरोड़ा ADC करनाल थे। तीज-उत्सव प्रसिद्ध समाज सेवी श्री श्रीनारायण गुप्ता जी की अध्यक्षता में मनाया गया।

सेवा बस्तियों के बच्चे तथा कन्याएँ जलमाना, जूँडला, नीलोखेड़ी तथा करनाल शहर से आए थे, अपने राष्ट्र भक्ति, धार्मिक गीतों तथा नृत्य से श्रोताओं का मन मोह लिया। पुष्पा का नृत्य 'सत्यम शिवम सुन्दरम' की भरपूर सराहना हुई। जलमाना के बच्चों की लघु नाटिका 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' ने सब श्रोताओं के साथ-साथ OSD महोदय को भी पसन्द आई। OSD महोदय ने अपने उद्‌बोधन में इसी को पृष्ठ भूमि में रखकर बताया, कि 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' ही देश की वास्तविक हरियाली है। उन्होंने सेवा भारती के कार्यों को भी सराहा। ADC, Karnal महोदय श्री गिरीश अरोड़ा जी ने सेवा बस्ती में बाल संस्कार के छः होनहार बच्चों को अपने हाथ से Momento's देकर सम्मानित किया। मेंहदी प्रतियोगिता तथा रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम व द्वितीय आई कन्याओं को भी ADC महोदय ने Momento's देकर प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में दानकर्ताओं ने दिल खोलकर दान दिया।

कार्यक्रम में विशिष्ट महानुभाव सर्वश्री सरदार प्रितपाल सिंह पन्नु राष्ट्रीय अध्यक्ष निफा, एस॰ डी॰ अरोड़ा अध्यक्ष पर्यावरण समिति करनाल, कृष्ण कुमार गाँधी, मोती राम एवं जेसा राम, तीनों Retd. Scienctist NDRI, पद्म जैन माननीय नगर संघचालक, जयपाल प्रान्तीय अध्यक्ष अनुसूचित जाति मोर्चा भाजपा, ओम जी वधवा जिला सेवाप्रमुख उपस्थित रहे। सर्वश्री शान्ति प्रकाश शर्मा प्रान्तीय कोषाध्यक्ष, ओम प्रकाश अत्रेजा प्रान्त प्रचार प्रमुख, अमर लाल परूथी ज़िला अध्यक्ष, हरिकृष्ण नारंग ज़िला सचिव, प्रेम कुमार खरबन्दा नगर सचिव, एम. एम. मित्तल, ओमप्रकाश वर्मा, चरणजीत शर्मा, जगदीश सहगल, अश्विनी बेरी, शाम सुन्दर पोपली, राधे श्याम पोपली, मोहिन्दर चौहान, पूरन चन्द चावला, निकुंज कृष्ण नारंग, जीवन दास ने व्यवस्था में सहयोग किया।

अन्त में ज़िलाध्यक्ष श्री अमरलाल पुरूथी द्वारा आभार : मंच पर विराजमान आदरणीय अध्यक्ष महोदय श्री श्रीनारायण जी गोयल, मुख्यातिथि O.S.D श्री अमरेंद्र सिंह जी, एवम् A.D.C श्री गिरीश अरोड़ा जी! सेवा भारती की तरफ से मैं आप सबका हार्दिक अभिनंदन करता हूँ, जिन्होंने अपना कीमती समय निकालकर सेवा केन्द्रों के बच्चों का कार्यक्रम देखा और इनका हौंसला बढ़ाया। सेवा भारती की ओर से O.P.S. विद्या मन्दिर के संचालक श्री अविनाश चन्द्र जी सर्राफ़ एवं अन्य स्टाफ का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने सेवा भारती के कार्यक्रम में अपना पूरा-2 सहयोग दिया। उन सभी दान दाताओं का भी धन्यवाद करता हूँ जो अपनी पवित्र कमाई से इस संस्था को सहयोग दे रहे हैं। श्री प्रितपाल सिंह पन्नू तथा उनकी समस्त निफा टोली के सदस्यों की सेवा भारती आभारी है, जो इस समय सेवा में अपना पूरा योगदान दे रहे हैं। हम उस संस्था का भी आभार व्यक्त करते हैं, जिसने अपनी बस से बच्चों को नीलोखेड़ी से करनाल तथा वापिस ले जाने में सहयोग दिया है। अन्त में मैं सभी महानुभावों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने तीज समारोह को सफल बनाने में सहायता की। अन्य सभी अतिथियों का धन्यवाद! जय हिन्द, जय भारत।

- हरिकृष्ण नारंग, ज़िला सचिव

मीठा बोलने वाला चतुर आमतौर पर किसी का हितैशी नहीं लगता, नमक की तरह कड़वा सच्चा-ज्ञान देने वाला ही सच्चा मित्र होता है। आज तक किसी ने नहीं देखा कि नमक में कीड़े पड़े हों। कृत्रिम मीठा बोलने वाले के समान मिठाई में कीड़े के साथ-साथ बीमारी भी होती है।

-अज्ञात

'पोप और चर्च के गुनाह'

ईसाईयों के पोप फ्रांसिस ने पिछले दिनों बोलिविया में उपनिवेशकाल में लातीनी अमरीका में हुए अत्याचारों में रोमन कैथोलिक चर्च की भूमिका के लिए माफ़ी माँगी। उन्होंने उपनिवेशवाद की बात करते हुए चर्च की करतूतों पर कहा कि मैं बहुत खेदपूर्वक कह रहा हूँ कि, ईश्वर के नाम पर अमरीका के स्थानीय लोगों के खिलाफ़ कई गम्भीर पाप किए। उसके लिए मैं विनम्रतापूर्वक माफ़ी माँगता हूँ, केवल चर्च द्वारा किए गए अपराधों के लिए ही नहीं वरन् अमरीका की कथित विजय के दौरान स्थानीय लोगों के ख़िलाफ़ किए गए अपराधों के लिए भी।' बेशक पोप की माफ़ी देर-सवेर ही सही, अपने अपराधों का एहसास करने की दिशा में एक अच्छा कदम है। परन्तु-

जो की कत्ल के बाद जफ़ा से तौबा, हाय! उस जूदे-पशेमां का पशेमां होना।

आज जिस ईसाईयत को प्रेम और सेवा की प्रतिमूर्ति के रूप में दुनिया के सामने पेश किया जाता है, उस ईसाईयत की असलियत कुछ और ही है। इतिहास गवाह है कि ईसाई साम्राज्यवाद के लिए दुनियाभर में नरसंहार, दूसरे मतों और संस्कृतियों पर हमलों की दूसरी कोई मिसाल इतिहास में नहीं मिलती। हम भारतीयों के बीच अक्सर इस्लाम के अत्याचारों की चर्चा होती है, लेकिन ईसाईयत का इतिहास दुनियाभर में ज़्यादा काला, भीषण और विकराल है। इसलिए उनके केवल लातीनी अमरीका से माफ़ी माँगने से काम नहीं चलने वाला, उन्हें पाँचों महाद्वीपों से अलग-अलग माफ़ी माँगनी होगी।

ईसाईयत के इतिहास में यह देखना दिलचस्प होगा कि यहूदियों के साथ ईसाईयों ने कैसा बर्ताव किया, क्योंकि ईसा यहूदी थे, परन्तु ईसा को यहूदियों ने मसीहा नहीं माना, तो वही सबसे बड़े दुश्मन बन गए। ईसा ने यहूदियों का मुक्तिदूत होने का दावा किया पर वे मृत्युदूत और यातनादूत बनकर रह गए। सारे यूरोप में ईसाईयत के फैलने के साथ यहूदी विरोध भी फैला। ईसाईयों द्वारा की गई यहूदियों के ख़िलाफ़ हिंसा और हत्याओं ने नरसंहार का रूप लिया। हिटलर ने तो लाखों यहूदियों का संहार किया। श्री सीताराम गोयल यहूदियों के नरसंहार को सीधे ईसा से प्रेरित बताते हैं। वे लिखते हैं 'गॉस्पल के ईसा ने यहूदियों को सांप, सांपों का बिल, शैतान की औलाद, मसीहाओं के हत्यारे कहकर निंदा की, क्योंकि उन्होंने ईसा को मसीहा मानने से इंकार कर दिया था। यहूदियों को सारे यूरोप में सदियों तक लगातार हत्याकांड का शिकार बनाया गया।' संक्षेप में फ्रांसीसी दार्शनिक वाल्टेयर ने

ईसाईयों के इतिहास पर टिप्पणी की थी कि ईसाई मज़हब दुनिया पर थोपा गया सबसे हास्यास्पद सबसे ज़्यादा एब्सर्ड और रक्तरंजित मज़हब है। हर सम्माननीय व संवेदनशील व्यक्ति को ईसाई पंथ से डरना चाहिए।' उनकी यह बात सोलह आने खरी है। ईसाईयत का सारा इतिहास रक्तरंजित दास्तान रहा है। सबसे पहला देश, जहाँ ईसाई पंथ राजपंथ बना वह था रोम। ईसाईयों का स्वभाव रहा है, जैसे ही पर्याप्त शक्ति संग्रहीत होती है वे भयंकर यातनाओं में और तेज़ी ले आते हैं। उन्होंने उन यहूदियों का उत्पीड़न किया, जिनसे ईसा तथा ईसाईयत उपजी। इसके अलावा उन्होंने अपने संप्रदाय से अलग संप्रदाय के ईसाईयों का भी नृशंस दमन किया। रोम में उन्होंने बहुदेववादियों के सारे उपासना स्थल नष्ट कर दिए। बाद में ईसाईयत यूनान पहुँची। किसी ज़माने में यूनान पश्चिमी सभ्यता का सिरमौर हुआ करता था, लेकिन ईसाईयों का वर्चस्व बढ़ने के साथ उसका यह सम्मान जाता रहा। **स्वामी विवेकानन्द** ने कहा था-'प्राचीन यूनान, ईसाईयों से बहुत पहले पश्चिमी सभ्यता का पहला शिक्षक था। मगर जब से वह ईसाई बना, उसकी सारी मनीषा और संस्कृति नष्ट हो गई।' कुछ ऐसी ही बात **महर्षि अरविंद** ने भी कही थी - 'यूनानियों के पास ईसाईयों से ज़्यादा ज्ञान था, ईसाई तो प्रकाश के बजाय अंधेरा लाए।'

भारत में जिस प्रकार मंदिरों में अनेक देव मूर्तियाँ साथ-साथ होती हैं, उसी प्रकार ग्रीक तथा पैगन मंदिरों में देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी वहाँ के मंदिरों में साथ-साथ होती थीं, न तो देवताओं में ईर्ष्या और नफ़रत भरी प्रतिस्पर्धा थी, न पुजारियों के बीच। मगर ईसाईयों ने अनेक समाजों और संस्कृतियों के मठ-मंदिरों को नष्ट किया, इसका इतिहास रक्तरंजित और रोंगटे खड़े कर देने वाला है। ईसाई संतों ने इसमें सबसे दुष्टतापूर्ण भूमिका निभाई। ऐसे क्रूर लोगों को वहाँ संत कहा गया। संत मारियस ने गाउल में अनेक प्रतिमाएँ जलाईं। एमिन्स के संत फरमिनस ने जहाँ भी मूर्तियाँ पाई उन्हें नष्ट किया। संत कोलंबस और संत गाल ने सारे यूरोप महाद्वीप में हज़ारों मंदिरों, मठों को नष्ट किया, मंदिरों से जुड़े बग़ीचों को उजाड़ डाला। जर्मनी में तो उन्होंने भीषण तबाही मचाई। संत ऑगस्टीन ने इंग्लैंड में यही किया। संत ग्रेगरी ने भी अनेक पैगन मंदिर नष्ट किए। परशिया और बाल्टिक क्षेत्रों को तेरहवीं सदी में ज़बरन ईसाई बनाया। पचास साल तक चले भीषण रक्तपात और युद्ध के बाद परशिया ने समर्पण कर दिया। समर्पण की शर्त थी कि सभी नागरिक एक माह के भीतर बप्तिस्मा कराकर ईसाई बन जाएं,

अन्यथा उन्हें गुलाम बना लिया जाए, उसे राज्य के विरुद्ध अपराधी भी घोषित कर दिया जाता था। एक संप्रदाय के राजा कानून बनाकर भिन्न ईसाई संप्रदायों पर पाबंदी तक लगाते थे। उनकी संहिता में लिखा था-हमारा आदेश है कि हमारे प्रशासन के अधीन सभी लोग केवल उस ईसाई संप्रदाय के प्रति आस्था रखेंगे जो दिव्य पीटर ने रोम वालों को सौंपा है, नहीं तो उन्हें दैवीय अभिशाप नष्ट करेगा। असल में यूरोप में पहले पैगन वंश के लोगों का समूल नाश किया गया, फिर अन्य ईसाई संप्रदायों के ईसाईयों को ढूँढ-ढूँढ कर जलाया गया। लाखों अन्य संप्रदायों के ईसाई सार्वजनिक उत्सवों के दौरान जलाए गए। पोप ग्रेगरी ने इंग्लैंड के बिशप ऑगस्टीन को सलाह दी कि जो भव्य मंदिर हों वहाँ की मूर्तियाँ हटा दी जाएँ और वहाँ 'सच्चे ईश्वर' की पूजा की जाए। इतिहास में ब्लडी मैरी का नाम भी बहुत मशहूर है। फिर यूरोप के ईसाईयों ने बाकी महाद्वीपों में जाकर यही इतिहास दोहराया। उन्होंने अमरीका और आस्ट्रेलिया जाकर वहाँ के स्थानीय निवासियों को असभ्य करार देकर उनका नरसंहार किया और उनकी ज़मीन जायदाद पर कब्ज़ा कर लिया। बेनेडिक्ट चर्च के पादरी कोलंबस के पीछे अमरीका पहुँचे। उन्होंने केवल हैती में ही पौने दो लाख मूर्तियों को नष्ट कर दिया, मैक्सिको के पहले पादरी जुआन-द-जुमरगा ने 1531 में दावा किया था कि उसने 500 से ज़्यादा मंदिर नष्ट किए और 20,000 से ज़्यादा मूर्तियाँ तोड़कर मिट्टी में मिला दीं।

गाँधीवादी चिंतक श्री धर्मपाल के शब्दों में- 'उनकी नज़र में विजित को आख़िरकार ख़त्म होना था। भौतिक रूप से न सही मगर संस्कृति और सभ्यता के रूप में आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड के सैंकड़ों टापुओं के स्थानीय निवासी जल्दी ही नेस्तोनाबूद कर दिए गए थे। 1402 में उत्तरी अमरीका में स्थानीय लोगों की आबादी लगभग 14 करोड़ थी उनके पूर्ण उन्मूलन में 300-400 साल लगे। अफ्रीकी महाद्वीप इस्लाम और ईसाईयत जैसे विस्तारवादी और घोर असहिष्णु मज़हबी हमलों को झेल रहा है, जिन्होंने उसे सदियों से दबोच रखा है। इससे उनकी प्राचीन संस्कृति लगभग खत्म होती जा रही है। दोनों के बीच स्थानीय लोगों को मतांतरित करने की होड़ चल रही है। हाल ही में यह हमला और तेज़ हुआ है और अफ्रीकी अपनी युगों पुरानी संस्कृति खोने की कगार पर हैं। प्राच्य विद्या विशारद कोनरॉड एल्स्ट के मुताबिक अफ्रीका में 1900 में 50 प्रतिशत लोग पैगन मज़हब को मानते थे। अब ईसाई और मुस्लिम मिशनरियों ने 10 प्रतिशत से कम पर पहुँचा दिया है। नए तरह

के उत्पीड़न पर 'हिस्ट्री ऑफ़ यूरोपियन मोरेल्स' के लेखक डब्लू. ई.एच. लेकी ने इस भेद का वर्णन इस तरह किया है-'यह नया उत्पीड़न अधिक लंबे समय तक टिकने वाला व्यवस्थित, अविचलित और अडिग था। लोगों को भीषण यंत्रणा देकर भी थमता नहीं था, न पीछे हटता था, ईसाई पांथिक पुस्तकों में ऐसे उत्पीड़न की भरपूर वकालत की गई है। ईसाईयत के प्रसार ने न केवल संस्कृतियों का विनाश किया, वरन् यूरोप, अमरीका, एशिया, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के करोड़ों लोगों की हत्याएं की। फ्रांसीसी दार्शनिक वॉल्टेयर के शब्दों में कहें तो ईसाईयत ने काल्पनिक सत्य के लिए धरती को रक्त से नहला दिया। पश्चिमी देश अपने को सेक्युलर कहने के बावजूद अपने को ईसाई मानते हैं, परन्तु सर्वाजनिक जीवन और शिक्षा व्यवस्था के ज़रिये सदियों तक ईसा के नाम पर मानवता के खिलाफ हुए अपराधों को छिपाते हैं। भारत में तो इस काले अध्याय को पूरी तरह से पोंछ दिया गया है, उस पर कभी चर्चा नहीं की जाती। ईसाईयत को प्रेम और सेवा के मत के रूप में प्रचारित किया जाता है, लेकिन उसमें इस बात की चर्चा नहीं की जाती कि इसके लिए कितने लोगों की बलि चढ़ाई गई। **स्वामी विवेकानन्द ने पूछा था-**'तमाम डींगों के बावजूद आपकी ईसाईयत तलवार के बिना कहाँ सफल हुई ? मुझे दुनिया का एक ऐसा देश बताइए, मैं कह रहा हूँ, पूरी ईसाईयत के इतिहास में एक मिसाल बताइये, मैं दो नहीं चाहता, मुझे पता है, आपके पूर्वज कैसे कन्वर्ट हुए। उनके सामने दो ही विकल्प थे, मत बदलें या मारे जाएँ। ये डींगे मारकर आप मुसलमानों से बेहतर क्या कर सकते हैं ? आप शायद यह कहना चाहते हैं कि हम अपनी तरह के अकेले हैं क्योंकि हम दूसरों को मार डालते हैं?'

भारत ईसाईयों की घोर विनाशलीला का शिकार हुआ। पुर्तगालियों की हिंसा जगज़ाहिर थी तो अंग्रेज़ों की हिंसा सूक्ष्म थी, चुपचाप जड़ें खोदने वाली थी। एक ईसाई इतिहासकार टी.आर. डिसूज़ा के मुताबिक पुर्तगालियों ने 1540 के बाद गोवा में सभी हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों को तोड़ दिया या ग़ायब कर दिया था। सभी मंदिर ध्वस्त कर दिए गए थे, उनकी ज़मीन और निर्माण सामग्रियों को नए चर्च या चैपल बनाने के लिए इस्तेमाल किया था। कई शासकीय और चर्च के आदेशों में हिन्दू पुरोहितों के पुर्तगाली क्षेत्र में आने पर रोक लगा दी गई थी। विवाह सहित सभी हिन्दू कर्मकांडों पर पाबन्दी थी। हिन्दुओं के अनाथ बच्चों को पालने का दायित्व राज्य ने अपने ऊपर ले लिया था ताकि उनकी परवरिश एक ईसाई की तरह की जा सके।

कई तरह के रोज़गारों में हिन्दुओं को चर्च में उनके धर्म की आलोचना करने वाले वक्तव्य सुनने के लिए आना पड़ता था। ईसाई मिशनरियां गोवा में सामूहिक कन्वर्जन करती थीं। इसके लिए सेंट पाल के कन्वर्जन भोज का आयोजन किया जाता था। उसमें ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को लाने के लिए जेसुइट हिन्दू बस्तियों में अपने नीग्रो गुलामों के साथ जाते थे। इन नीग्रो लोगों का इस्तेमाल हिन्दुओं को पकड़ने के लिए किया जाता था। ये नीग्रो भागते हिन्दुओं को पकड़कर उनके मुँह पर गाय का मांस छुआ देते थे, इससे वे हिन्दू लोगों के बीच अछूत बन जाते थे। तब उनके पास ईसाई मत में कन्वर्ट होने के अलावा कोई विकल्प नहीं रह जाता था। इतिहासकार ईश्वर शरण ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है-'संत जेवियर के सामने औरंगज़ेब का मंदिर विध्वंस और रक्तपात कुछ भी नहीं था। अंग्रेज़ शासन के बारे में नोबल पुरस्कार विजेता वी. एस. नायपाल की यह टिप्पणी ही काफ़ी है-'इस देश में इस्लामी शासन उतना ही विनाशकारी था जितना उसके बाद आया ईसाई शासन। ईसाईयों ने एक सबसे समृद्ध देश में बड़े पैमाने पर ग़रीबी पैदा की।'

पोप ने अब माफ़ी माँगनी शुरू की है, तो केवल लातीनी अमरीका से माफ़ी माँगने भर से काम नहीं चलेगा। उन्हें कई देशों, समाजों, कई मतों और स्वयं ईसाईयत के विभिन्न संप्रदायों से भी माफ़ी माँगनी पड़ेगी। उन्हें यहूदियों, बहुदेववादियों, अन्य संप्रदाय के ईसाइयों और हिन्दुओं से माफ़ी माँगनी होगी। उन्हें माफ़ी माँगनी पड़ेगी उन लाखों महिलाओं से जिन्हें यूरोप में चुड़ैल कहकर जला दिया गया था। उन्हें गैलीलियो जैसे वैज्ञानिकों से प्रताड़ित किए जाने के लिए माफ़ी माँगनी होगी। पोप माफ़ी माँग भी लेंगे, लेकिन क्या ये प्रताड़ित लोग उनकी माफ़ी कबूल करेंगे? माफ़ी माँगने से इतिहास तो नहीं बदलता। असली माफ़ी तो तब होगी जब ईसाईयत अपना असहिष्णु और विस्तारवादी चरित्र बदले। शायद यह कर पाना पोप के वश की बात नहीं। पोप फ्रांसिस भले ही कितने ही प्रगतिशील होने का दावा क्यों न करें, ईसाईयत के मूल चरित्र को वे कैसे बदल पाएँगे? इस्लाम और ईसाइयत दोनों ही असहिष्णुता रूपी सिक्के के दो पहलू हैं। उनकी असहिष्णुता को देखकर कई बार लगता है महात्मा गाँधी द्वारा बार-बार प्रचारित की जाने वाली यह बात खतरनाक थी, कि सभी मज़हब समान हैं या एक हैं। कैनबरा में जन्मे हिन्दू स्वामी अक्षरानंद के शब्दों में कहा जाए तो, 'यह बात मूर्खतापूर्ण और खतरनाक बात प्रचारित की जा रही है। हम हिन्दू, ईसा और अल्लाह दोनों शक्तियों से

प्रताड़ित हैं। हिन्दुओं को अन्य मत, पंथों और मज़हबों को समान और एक नहीं मानना चाहिए। 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम' केवल हिन्दू कहता है। 'मज़हब नहीं सिखाता आपास में बैर करना' सबसे बड़ा ढकोसला है। केवल धर्म और वह भी हिन्दू धर्म नहीं सिखाता आपास में बैर करना। केवल हिन्दू कहता है-'सर्वे भवन्तु सुखिनः'। **-साभार पाञ्चजन्य से (संक्षेप)**

'सेवा भारती, कुरुक्षेत्र'

सेवा भारती, कुरुक्षेत्र ने अपना वार्षिक उत्सव 16-08-15 को गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर के माधव विशाल कक्ष में मनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्रीमान् कंवरपाल स्पीकर हरियाणा विधान सभा पधारे, इनके अतिरिक्त विशिष्ठ अतिथि सर्वश्री धनपतराय सिंघला, लाला धनीराम भारती, विकास गर्ग व वेद प्रकाश, कलसाना वाले भी उपस्थित हुए। मुख्य वक्ता के रूप में श्रीमती पद्मेश बवेजा प्रान्त सेवा प्रमुख, राष्ट्र सेविका समिति हरियाणा ने अपने वक्तव्य में सेवा कार्यों को और बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया तथा सेवा के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने सेवा भारती कुरुक्षेत्र की बहनों द्वारा तैयार की गई राखियों की प्रतियोगिता को रुचि से देखा तथा Best out of Waste प्रतियोगिता की प्रशंसा की।

उत्सव का शुभारम्भ प्रदर्शनी का रिबन काटकर कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित करके किया। गाँधी नगर की बच्चियों ने सरस्वती वन्दना का गायन किया। मंच पर अनेक मनमोहक कार्यक्रम केन्द्रों पर आने वाले सेवित भाई या बहनों द्वारा ही प्रस्तुत किये। प्रथम पुरस्कार 15 वर्ष से ऊपर वर्ग में श्रीमती पूनम शर्मा अध्यापिका द्वारा निर्देशित पंजाबी गीत "खेडन दे दिन चार" पर किये गये नृत्य व अभिनय को मिला। इसके अतिरिक्त 15 वर्ष से छोटे बच्चों की प्रतियोगिता में कुमारी मीनाक्षी अध्यापिका बाल शिक्षा संस्कार केन्द्र भट्टा कालोनी द्वारा निर्देशित कृष्ण-लीला प्रथम व कुमारी रमनदीप अध्यापिका गायत्री माता सिलाई केन्द्र सुन्दरपुर द्वारा निर्देशित पंजाबी "शब्द" गायन एवं कुमारी मोनिका अध्यापिका द्वारा निर्देशित (बाल संस्कार केन्द्र N.I.T. Bearer Colony) देश मेरा रंगीला, दो बच्चियों द्वारा नृत्य तथा श्रीमती वालिया श्रवण कुमार बाल शिक्षा संस्कार केन्द्र छोटा बाज़ार ने निर्देशित देश भक्ति गीत को पुरस्कृत किया गया। श्री मोहन लाल नागरथ द्वारा सेवा भारती की वार्षिक गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। श्रीमान् कंवर पाल स्पीकर हरियाणा विधानसभा में अपने सम्बोधन में सेवा भारती, कुरुक्षेत्र के सेवा कार्यों

की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा अपने निजी कोष से दो लाख रुपये देने की घोषणा की। राखी प्रतियोगिता में विजयी प्रथम कल्पना चावला सिलाई केन्द्र द्वितीय रविन्द्र नाथ टैगोर बाल शिक्षा संस्कार केन्द्र K.U.K. Campus, तथा तृतीय गायत्री माता महिला सिलाई केन्द्र सुन्दरपुर रहा। Best out of waste का कल्पना चावला सिलाई केन्द्र मोहन नगर की अनीता, माता जीजा बाई सिलाई केन्द्र दीदार नगर की सुषमा को स्मृति चिन्ह भेंट किया। श्री वेद प्रकाश कलसाना वालों ने 21,000 रुपये, श्री धनपत राय सिंघला जी ने ग्यारह हजार, डॉ॰ H.C. Bansal जी ने ग्यारह हज़ार तथा विकास गर्ग जी द्वारा ग्यारह हजार रुपये की राशि भेंट की। कार्यक्रम के बीच में सभी उपस्थित लगभग 500 जनों को सेवा भारती की अध्यापिका श्रीमती चन्द्र कला के पाककला केन्द्र द्वारा निर्मित ताज़े फलों का जूस तथा एक-एक कचोरी जलपान स्वरूप वितरित की गई। अन्त में माता मनसा देवी भण्डारा ब्रह्म सरोवर कुरुक्षेत्र की ओर से कढ़ी चावल सहभोज के रूप में दिया गया।

सीमा पर तैनात सैनिकों के लिए राखियाँ : सेवा भारती, कुरुक्षेत्र के सभी प्रकल्पों पर बहनों ने भारतीय सेना के जवानों के लिए बड़े उत्साह व श्रद्धा हाथों से राखियाँ बनाकर उन्हें सेवा भारती के जिला अध्यक्ष श्री सन्त लाल जी व अन्य लोगों के माध्यम से उन्हें जम्मू-काश्मीर के पुंछ ज़िले की सीमा पर भेजा गया। श्रीमान् सन्त लाल जी ने लगभग एक हज़ार राखियों का थैला पुंछ सीमा पर तैनात यादव रैजीमैन्ट के मेजर यादव जी को सौंपा गया सन्त लाल जी के साथ बुढ़ा बाबा अमरनाथ की यात्रा पर गये जत्थे में यात्रियों में से एक बहन कृष्णा ने एक राखी मेजर साहब को प्रतीक रूप में 21-8-15 को बाँधी सेना द्वारा देश पर किये जा रहे उपकार के लिए उनसे कृतज्ञता प्रकट की। यह सभी राखियाँ बहनों ने स्वयं के खर्चे पर तैयार की थी। **-प्रेमनाथ अनेजा**

भट्टा कालोनी में बाल संस्कार केन्द्र : 07 जुलाई 15, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की दीवार के साथ स्थित भट्टा कालोनी में बाल संस्कार केन्द्र का श्री मोहन लाल नागरथ, श्री डॉ॰ मनीष कुकरेजा जी योग प्रमुख ने भारत माता के चित्र सम्मुख पुष्प अर्पित कर शुभारम्भ किया। इस अवसर पर सर्वश्री पराशर जी, ओंकारनाथ जी, कुमारी श्रुति, पूर्व अध्यापिका मोनिका, प्रेमनाथ अनेजा जी, रावत जी एवं स्थानीय माताएँ व बच्चे उपस्थित हुए। कुमारी मीनाक्षी ने इन वंचित व ग़रीब समाज के बच्चों को पढ़ाने व संस्कार प्रदान करने का ज़िम्मा लिया। बीच में कभी-2 कोई केन्द्र बन्द होने पर अतिरिक्त स्थान पर अन्य

केन्द्र शुरू कर दिया जाता है, इस कारण यह नया केन्द्र सेवा भारती का 30वाँ केन्द्र है। अन्त में मोहन लाल जी नागरथ ने सभी उपस्थित जनों का धन्यवाद कर प्रसाद बाँटा। **-मोहनलाल नागरथ**

सेवा भारती, फरीदाबाद

विजय नगर में एक सिलाई केन्द्र का शुभारम्भ श्रीमती रिचा प्रकाश के निवास पर 28 अगस्त-15 को श्री शिवकुमार जी की उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम में गीत, गायत्री-मंत्र तथा हवन करवाया गया। श्री शिव कुमार जी ने अपने विचार बहनों के सामने रखे। कार्यक्रम में उपस्थित डॉ. मधुसूदनवाला, एम. वी. प्रसाद, राकेश वत्स, मोहन शास्त्री, भुवनेश शर्मा तथा ओम प्रकाश पाण्डे उपस्थित रहे। बाद में प्रसाद वितरण हुआ।

सूर्यविहार स्कूल में सिलाई केन्द्र की परीक्षा करायी गयी जिसकी अध्यक्षता शिव कुमार जी ने की। एम.वी. प्रसाद, डा. मधुसूदन, मोहन शास्त्री, भुवनेश शर्मा जी उपस्थित रहे। बीच में सभी को जलपान कराया गया। बिशन दयाल जी महेन्द्रगढ़ की देख रेख में परीक्षा सम्पन्न हुई। **-मोहन शास्त्री**

सेवा भारती, पुन्हाना

तृतीय निःशुल्क आंखों का मोतियाबिन्द ऑप्रेशन कैम्प का 1 सितम्बर 2015 को सेवा भारती कार्यालय के प्रांगण में डॉ. श्रॉफ़ चैरीटेबल आई अस्पताल वृन्दावन के डाक्टरों के सहयोग से आयोजन किया गया। कैम्प का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन करके किया, जिसमें मुख्य अतिथि वृन्दावन के डॉ. अनुज दुबे रहे। डॉ. अनुज ने मरीज़ों से कहा कि ऐसी संस्थाओं की वजह से नेत्र रोगी अपना ईलाज करवाकर प्रकृति की सुन्दरता को देख सकते हैं। सेवा भारती अध्यक्ष श्री गोविन्दराम सोनी ने कहा कि- 'समाज के सहयेाग से ही संस्था समाज सेवा में अग्रसर रहती है।' कैम्प में 100 मरीज़ों का रजिस्ट्रेशन करके 18 मरीज़ों को ऑप्रेशन के लिए चुना गया जिनको वृन्दावन भेजकर सफलतापूर्वक ऑप्रेशन कराया गया। ज़िला सचिव सर्वश्री राजीव मंगला, संरक्षक छिदामल, सुभाष सिंगला, मुरारी लाल गोयल, सतपाल कालड़ा, श्री मनीष अरोड़ा, प्रदीप गोयल, महेश कुमार, सन्नी ग्रोवर, गिरीष बंसल मौजूद रहे।

वार्षिकोत्सव : 1 सितम्बर 2015 को सेवा भारती पुन्हाना ने चौथा वार्षिकोत्सव कार्यालय के प्रांगण में बड़ी धूमधाम से मनाया, जिसमें मुख्य अतिथि श्री कृष्ण कुमार सहप्रांत सेवाप्रमुख, विशिष्ट अतिथि श्री नाथू राम चावला संरक्षक सेवा भारती फिरोज़पुर झिरका व कार्यक्रम अध्यक्ष श्री मूलचंद गोयल उद्योगपति

रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन करके किया गया। बाल संस्कार केन्द्र के बच्चों, सिलाई सैंटर की बहनों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में स्वागत गीत, देशभक्ति गीत, झांकी बनाकर सभी का मन मोह लिया। महिला मंडल की महिलाओं ने देशभक्ति गीत सुनाये। बाहर से आये अतिथियों को स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया गया। नेत्रदान दाता परिवार के सदस्यों को भी स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सभी प्रकल्प प्रमुखों ने अपने प्रकल्पों का विवरण दिया। मुख्य वक्ता श्री कृष्ण कुमार ने कहा, 'सेवा सबसे बड़ा धर्म है, देश के सभी महापुरुष समाजसेवा से ही महान बने।' प्रधान श्री गोविन्दराम सोनी ने बताया कि- 'संस्था ने 1 वर्ष में 14 कार्यक्रम करके काफ़ी उपलब्धियां मिली व समाज में जागरुकता आई है और सभी को धन्यवाद किया। कार्यक्रम में 200 की संख्या रही। कार्यक्रम के अन्त में प्रसाद वितरण किया गया।

-गोविन्दराम सोनी

'सेवा भारती, रोहतक'

27 अगस्त 2015 को सेवा भारती कार्यालय, महावीर कालोनी, रोहतक में "रक्षा-बंधन उत्सव" मनाया गया, जिसमें नगर के 8 केन्द्रों (तीन सिलाई केन्द्र एवं पाँच बाल संस्कार केन्द्र) के 80 छात्र/छात्राओं, सभी अध्यापिकाओं व कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ तीन बार सामूहिक गायत्री-मंत्र पाठ के साथ हुआ। केन्द्रों के बच्चों ने अपना एक-एक कार्यक्रम रखा, जिसमें एकल गीत, समूहगान, अभिनय गीत, कविता, दोहे इत्यादि विभिन्न प्रकार की प्रस्तुतियाँ थीं। सभी छात्र/छात्राओं को तीन दलों में बाँटकर 'प्रश्न-मंच' कार्यक्रम के अर्न्तगत 'वन्दना' पुस्तिका के आधार पर प्रश्न पूछे गए। जिसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। नगर सचिव श्री राजेन्द्र प्रसाद जुनेजा ने रक्षा-बंधन त्यौहार पर प्रकाश डाला और सभी को आपस में एक दूसरे की रक्षा करने का संकल्प दिलाया। अन्त में नगर अध्यक्ष श्री मोती राम जैन ने सभी का धन्यवाद किया। अन्त में शान्तिपाठ के पश्चात् सभी को प्रसाद वितरित किया गया। इस कार्यक्रम में मंच संचालन सिलाई प्रशिक्षिका श्रीमती प्रोमिला रानी ने किया। सभी अध्यापिकाएँ/प्रशिक्षिकाएँ श्रीमती सीमा रानी, कु॰ सीमा एवं कु॰ संगीता तथा जिलाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश अरोड़ा, नगर उपाध्यक्ष श्री राधेश्याम गुप्ता व श्री नारायण आसरा नागपाल, विशेष रूप से उपस्थित रहे। **- मोती राम जैन**

'असंभव कुछ भी नहीं

एक बालक को उसके पिता ने विद्या अध्ययन के लिए गुरुकुल में भेजा। बालक गुरुकुल में विद्या अध्ययन करने लगा। एक दिन गुरुजी ने उस बच्चे को सबक याद करने के लिए दिया, परन्तु बहुत कोशिश करने के बाद भी बालक को सबक याद नहीं हुआ। सबक न सुनाने पर गुरुजी को गुस्सा आ गया। उन्होंने दंड देने के लिए डंडा उठाया, तो बालक ने अपना हाथ आगे कर दिया। गुरुजी ज्योतिष के प्रखर ज्ञाता थे, उन्होंने बच्चे की हाथ की लकीरें देखी तो उनका गुस्सा शांत हो गया। दंड न मिलने पर बालक ने जिज्ञासा पूर्वक पूछा, "गुरू जी आपने मुझे दंड क्यों नहीं दिया ?" इस पर गुरुजी बोले, "बेटे तुम्हारे हाथ में विद्या की रेखा न होने के कारण ही तुम्हें सबक याद नहीं हुआ और तुम आगे विद्या प्राप्त नहीं कर सकोगे।" यह सुनकर बालक तुरन्त बोला, "विद्या की रेखा नहीं है तो क्या हुआ? रेखाएँ भाग्य का निर्धारण नहीं करती, यदि मनुष्य कुछ करना चाहे तो उसके लिए असंभव कुछ भी नहीं, कर्म रेखाएँ बनाती हैं।" यही बालक आगे चलकर संस्कृत व व्याकरण के प्रख्यात विद्वान बने, जिन्हें हम "पाणिनी" कहते हैं। इसलिए हमें कभी भी भाग्य पर आश्रित नहीं होना चाहिए। कर्म से ही भाग्य का निर्धारण होता है।

भाग्य पर आश्रित न हो पाए इन्सान आबाद कभी,
भाग्य पर आश्रित न लग पाए धर्म की राह कभी। -

अज्ञात

श्राप या वरदान

मैं झाँसी से उदई बस से जा रहा था। एक बूढ़ा व्यक्ति चिरगाँव से बस में बैठा, कण्डक्टर ने उसका टिकट बनाया, उससे रुपये लिये, परंतु कंडक्टर ने कहा टुटे रुपये नहीं हैं, कंडक्टर ने दो रुपये टिकट के पीछे लिखकर टिकट सवारी को देकर कहा-'जहाँ उतरना, वहाँ ले लेना।' ऐसी ही क्रिया वह अधिकतर सवारियों के साथ कर रहा था। जब बूढ़ा व्यक्ति सेमरी गाँव में उतरा तो कंडक्टर से उसने दो रुपए माँगे, कंडक्टर बोला, तीन रुपये दो और पाँच ले लो। बूढ़ा बोला- खुल्ले होते तो पहले ही दे देता। कंडक्टर बोला, तो फिर ले लेना और बस आगे बढ़ा दी। बूढ़ा बेचारा सिर्फ यह बोला-'तेरा भला नहीं होगा।' सेमरी एवं अमरा गाँव के बीच भी एक सवारी के साथ यही घटना हुई। मोंठ ग्राम के पहले ही मोटर ठेले से टकरा गई, जिसमें कई सवारियों को चोटें आयीं, कण्डक्टर को अधिक चोटें आयीं और दो रुपये के बदले पाँच सौ रुपये कण्डक्टर के दवा, पट्टी आदि में खर्च हो गये

होंगे। ग़लत कार्य का ऐसा ही नतीजा होता है। लोग कहते हैं श्राप अब नहीं लगता, परन्तु अन्तर्वेदना से दिया गया श्राप अवश्य लगता है एवं अन्तर्मुख से दिया गया आशीर्वाद भी लगता है। **-घनश्यामशरण श्रीवास्तव**

आपात्काल में एक स्वयंसेवक का संघर्ष

10वीं किस्त- सेवादर्शन पत्रिका के पिछले अंकों में आप पढ़ चुके हैं कि आपात्काल के समय अशोक विहार दिल्ली से हम एक पत्रिका 'दर्पण' निकालते थे। उस पत्रिका को हरियाणा के सभी क्षेत्रों में भूमिगत रहकर बांटते हुए अनेक कार्यकर्ता बन्दी भी बनाए गए थे। दर्पण पत्रिका का प्रारूप तैयार होता था अशोक विहार में, छपता था पलवल से और उसकी हज़ारों प्रतियाँ ट्रंकों में भरकर हरियाणा के चार प्रमुख केन्द्रों तक पहुंचाते थे बाबा विशन दास जी (नकली नाम से) वास्तव में यह थे हरियाणा के प्रमुख प्रचारक श्री तिलकराज जी, आजकल वह दिल्ली में रहते हैं। यह भी आप पढ़ चुके हैं कि अशोक विहार दिल्ली निवास पर पुलिस का छापा पड़ने से कुछ क्षण पहले ही सरदार सुखनंदन सिंह जी तथा मैं वहाँ से बच निकले थे।

दिसम्बर-75 के तीसरे सप्ताह में मुझे सूचना मिली कि चण्डीगढ़ रोज़ गार्डन में सायं 5 बजे एक बैठक में पहुँचना है। वह बैठक जिस अधिकारी ने ली थी उसे मैं भूल चुका था। उस बैठक की याद ताज़ा कराई वर्तमान में उत्तर क्षेत्र प्रचारक प्रमुख श्रीमान् रामेश्वर जी ने, जब वे सन् 2000 में हरियाणा प्रांत प्रचारक बनकर आये। परिचय बैठक में मैं अपना परिचय खड़े होकर देने लगा तो मा. रामेश्वर जी ने कहा ओम प्रकाश! तुम बैठ जाओ, मैं तुम्हें जानता हूँ। मैं हैरान! मैं तो इन्हें कभी मिला नहीं, ये मुझे कैसे जानते हैं? बैठक के बाद जब मैंने उनसे पूछा, तो उन्होंने आपात्काल में रोज़-गार्डन की बैठक की याद दिलाई। 25 वर्ष बाद उनकी स्मरण शक्ति देखकर मैं दंग रह गया।

29,30,31 दिसम्बर 1975 को कांग्रेस का अखिल भारतीय कामागाटामारू महासम्मेलन मोहाली में होना तय हुआ था।

हमारे राष्ट्र का मूल चिन्तन इतना पवित्र, उद्दात् एवं उदार है कि हम जहां भी रहते हैं, वहीं घुल-मिल जाते हैं। विश्व के 84 देशों में भारतीय बसते हैं। संसार के किसी कोने से भी ऐसी कोई शिकायत नहीं आई कि भारतीय किसी देश के लिए वहां की राष्ट्रीय समस्या बन गया हो। बल्कि हर भारतीय किसी भी देश में रहता हो, वहां की हर समस्या के समाधान में सहायक होता है, परन्तु यह समझ से बाहर है कि अपने देश की समस्याओं के प्रति यहां का नागरिक उतना जागरुक क्यों नहीं? **-ओमप्रकाश वर्मा**

संघर्ष समिति ने तय किया था, कि उस सम्मेलन में जब श्रीमती इन्दिरा गांधी अपना भाषण शुरू करेगी, तब उस सभागृह में सत्यग्रह किया जाये। उस सत्याग्रह की सारी व्यवस्था मेरे ज़िम्में लगाई गई थी। मैंने और श्री गुलशन जी भाटिया वर्तमान में भाजपा प्रान्तीय कार्यालय मन्त्री रोहतक ने मिलकर भेष बदलकर 3-4 दिन पूर्व उस स्थान का निरीक्षण करना शुरू कर दिया था। सुरक्षा व्यवस्था ज़बरदस्त थी। कई दिन पहले ही आने वाले हर व्यक्ति की तलाशी ली जाने लगी थी। हमारे सामने समस्या थी कि अपात्काल के विरुद्ध छपी सामग्री कैसे लेकर जायें? अनेक बार तलाशी से गुज़रने के बाद हमें अनुभव हो गया था, कि शरीर के एक भाग की तलाशी नहीं ली जा रही थी।

29 दिसम्बर, 1975 को पंजाब से 16 सत्याग्रही हमारे पास पहुँच गये थे। हमने जानकारी प्राप्त कर ली थी कि 30 दिसम्बर दोपहर बाद श्रीमति इन्दिरा गांधी का भाषण होगा। उसी के अनुसार मैंने और गुलशन जी ने अपने लंगोट के नीचे इश्तिहार बांध लिए और जनसभा स्थान पर समय से पूर्व सत्याग्राहियों के साथ अलग-अलग ग्रुप बना कर बैठ गये। जनसभा के लिए विशाल पंडाल हांककर लाए गए श्रोताओं से खचा-खच भर गया था। छोटे बड़े नेताओं के भाषणों के बाद जब श्रीमती इन्दिरा गांधी मंच पर पधारी तो चारों ओर से इन्दिरा गांधी की जय-जयकार के नारे गूंजने लगे। दो-तीन मिनट के बाद मंच संचालक ने इन्दिरा गांधी का स्तुतिगान करते हुये अन्य बड़े नेताओं के साथ स्वागत किया, तत्पश्चात इन्दिरा गांधी का सम्बोधन शुरू हुआ। अभी इन्दिरा गांधी ने 2-3 वाक्य ही बोले थे कि पांच सत्याग्राही खड़े हुए, उन्होंने 'भारत माता के जय', 'जय प्रकाश ज़िन्दाबाद', 'इन्दिरा गांधी मुर्दाबाद', इन्दिरा गांधी की तानाशाही नहीं चलेगी, नहीं चलेगी। पूरा पण्डाल इन सत्यग्रहियों की हिम्मत देखकर दंग रह गया। 4-5 मिनट के बाद 15-20 पुलसिये आये और पांचों को पकड़कर पास बनी छोलदारी में ले गये। जहाँ से उन्हें बुरी तरह से पीटने की आवाज़ें आ रही थी। कुछ क्षण रुकने के बाद

भारतीय संस्कृति का एक ही संदेश है कि हम सच्चे अर्थों में मनुष्य (आर्य) बनें और जीवन के सभी क्षेत्रों को मानवता से ओत-प्रोत करें। संसार में से पशुता के अंधकार को हटाकर इस दिव्य आचार-विचार की ज्योति प्रकाशित करें, जिसके प्रकाश में मानव अपने आपको सच्चा इंसान अनुभव कर सके, स्वयं शान्ति से रह सके और दूसरों को शान्तिपूर्वक रहने दे सके। -चन्द्रवीर भाटिया

श्रीमती इन्दिरा ने फिर से बोलना शुरू किया, अभी 5-6 मिनट बोली होगी, कि अन्य पांच सत्याग्राहीयों ने नारे लगाने शुरू कर दिये। उनके साथ भी वही हुआ। उन्हें पकड़कर उसी छोलदारी में लेजाकर पिटाई की गई, जिनकी पिटने की आवाज़े आ रही थीं। अन्य छः सत्याग्राहियों ने पन्द्रह-बीस मिनट तक प्रतीक्षा की, इस बीच इन्दिरा गांधी गुस्से में आ गई और जोश में बोलते हुये वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा जनसंघ का नाम ले-लेकर कोसने लगी। उस समय बाकी के छः सत्याग्रहियों ने इश्तहार उछालने शुरू कर दिये और 'भारत माता की जय', 'देखो सत्याग्रह की आँधी, क्या करेगी इन्दिरा गांधी' आदि नारे लगाने लगे। इस बार जनसभा में अफ़रा-तफ़री मच गई और पुलिस भी देर से आई।-**अगले अंक में ज़ारी.**

स्वतन्त्रते! शत्-शत् वन्दन है, मुक्त किया बन्दी चिन्तन है,
साँसें थी परतन्त्र हमारी, आशाएँ थीं न स्वतन्त्र हमारी।
कितना पीड़ादायक होता, अपने ही घर में बन्धन है,
पराधीन थी कथनी-करनी, व्यथा हृदय की जाए न वरणीं।
भाषा संस्कृति और धर्म का, पराधीनता में दुर्दिन है,
मुक्त कराया बलिदानों ने, अमर शहीदों के प्राणों ने।
उन्हें और उनकी जननी को, कृतज्ञ-राष्ट्र कर रहा नमन है,
पर स्वतन्त्र जीवन यह कैसा, लगता है वैसे का वैसा।
चिन्तन और चरित्र न बदले, उन्हीं आदतों का बन्धन है,
अब भी हम गुलाम हैं मन के, इन्द्रिय भोगों के व तन के।
स्वामी होकर सेवक जैसा, हुआ हमारा चाल-चलन है,
बोध कहाँ है आत्मशक्ति का, भाव कहाँ है राष्ट्र-भक्ति का।
स्वार्थ और शोषण का बन्दी, अरे! आज भी तो जन-जन है,
भाषा, संस्कृति, धर्म भान कब, और स्वदेशी स्वाभिमान कब।
आओ! आज विचारें! क्या यह स्वतन्त्र होने का लक्षण है?
मुक्त विकारों, विकृतियों से, दुश्चिंतन से दुष्कृतियों से,
कुरीतियाँ, कुरुढ़ियाँ छूटें, तब स्वतन्त्रता का अर्चन है।
स्वतन्त्रते! शत्-शत् वन्दन है, मुक्त किया बन्दी जीवन है।

-मंगल विजय 'विजयवर्गीय'

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा द्विमासिक पत्रिका, स्वामित्व- सेवा भारती (पंजी.) हरियाणा।
मुद्रक : जुगल बठला, मै. बठला प्रिंटर्ज़, विवेकानन्द विद्यालय परिसर, करनाल।
सम्पादक व प्रकाशक : ओम प्रकाश अत्रेजा, ई. 230, अर्जुन गेट, करनाल-132001